nwda.gov.in

जागरण विशेष

चंद्रप्रकाश शर्मा • नईदुनिया

'जल आंदोलन' से जुड़ा जनसमूह तो धरती मां को पानी लौटाने लगा देवास

मप्र के शहर ने बिना सरकारी मदद रचा इतिहास, घरों, उद्योगों, निजी व सरकारी स्कूलों, होटल, मंदिर-आश्रमों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम से सहेजा वर्षा जल

देवास: मध्य प्रदेश के देवास शहर में पांच लोगों द्वारा शुरू किए गए अभियान ने सरकारी मदद के बिना इतिहास रच दिया है। सड़क पर व्यर्थ बहने वाले वर्षाजल को इस वर्ष जमीन में उतारने के लिए शुरू हुए अमृत संचय जन आंदोलन से जब शहर के लोग जुड़े तो इसने 'जल आंदोलन' का रूप ले लिया। इसका प्रभाव यह हुआ कि रसातल की ओर जाने वाला भूजल स्तर ऊपर उठना शुरू हो गया।

हर जगह वर्षाजल सहेजने का प्रयास: घरों, उद्योगों, अस्पताल, निजी व सरकारी स्कूल, होटल, वेयरहाउस, मंदिर-आश्रम की छतों पर रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाकर बूंद-बूंद वर्षाजल को सहेजा जा रहा है। छतों के अलावा अन्य स्थानों पर गिरने वाले वर्षाजल को रिचार्ज पिट, डगवेल, परकोलेशन टैंक, संकेन पांड, कंटूर ट्रेंचेस आदि के माध्यम से जमीन में उतारा जाने लगा। आमतौर पर एक हजार वर्गफीट क्षेत्रफल वाली छत से करीब एक लाख लीटर जल वर्षाकाल में व्यर्थ बह जाता है। अभियान से जुड़े लोगों का कहना है कि देवास में जितनी छतों पर वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगे हैं, उससे अब तक करीब दो सौ करोड़ लीटर जल संचयन हो चुका है। देवास के इस नवाचार पर अब मप्र काउंसिल आफ साइंस एंड टेक्नोलाजी अध्ययन कर रिपोर्ट तैयार करेगी। टीम आकर देखेगी कि इतना बड़ा जन आंदोलन बिना सरकारी मदद के कैसे संभव हुआ और इसका देवास के भूजल स्तर पर क्या प्रभाव हुआ। इस रिपोर्ट को मध्य प्रदेश के अन्य शहरों से साझा किया जाएगा, ताकि वे भी प्रयास कर सकें।

यूं आरंभ हुआ अमृत संचय: भूजलविद् डा. सुनील चतुर्वेदी इस बात से चिंतित थे कि देवास में जलसंकट गहराता जा रहा है। उन्होंने इस चिंता को चिंतन में बदला और 'अमृत संचय' नामक अभियान शुरू किया। वह अपनी टोली के साथ घर-घर गए और लोगों को जल का महत्व समझाया। देखते ही देखते यह पहल जन अभियान बन गई। इसी वर्ष 16 मई से शुरू हुए इस अभियान में देवास शहर के विभिन्न सेक्टरों की सूची बनाई गई और अनेक बड़े संस्थानों को अभियान से जोड़ा गया। सबके साथ बैठक कर छत का पानी जमीन में उतारने के लिए वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाने को प्रेरित किया गया। दो माह से भी कम समय में यह पहल बड़ा अभियान बन गई और घरों व प्रतिष्ठानों में हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाए गए।

कभी ट्रेन से आता था पानी

एक दौर था, जब देवास में पानी के लिए त्राहि-त्राहि मची थी। भूजल स्तर गिरने से वर्ष 1980 से 2000 के बीच यहां ट्रेन से पानी मंगवाना पड़ा था। उसके बाद भी वर्षों तक संकट बना रहा।

वाटर हार्वेस्टिंग के माध्यम से छत का पानी उतारे जाने से कुआं इस सीजन में ही लबालब हो गया • सौ. टीम अमृत संचय >>

सूख चुके कुआं व बोरिंग में आया पानी

देवास में आरंभ हुए अभियान की सफलता पहले ही वर्ष दिखाई देने लगी है। जिन घरों में वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम लगाया गया, वहां इसी वर्षा ऋतु में कुआं व बोरिंग में पानी आ गया है, जबकि प्रतिवर्ष सीजन के अंत तक इनमें पानी आता था। इससे अभियान टीम के साथ शहरवासियों का भी उत्साह बढ़ा है। उत्साहित लोग दूसरों को प्रेरित करने के लिए अपने घरों पर लगे वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के फोटो और वर्षा का पानी जमीन में उतरने की प्रक्रिया के वीडियो एक-दूसरे से साझा कर रहे हैं।

> अमृत संचय अभियान सरकार का नहीं, जनता का है। हमने पानी का महत्व बताया, जन-जन को जागरूक किया और इसे बचाने के तरीके बताए। लोग आज और आने वाली पीढ़ी के लिए जल सहेजने में जुट गए हैं। हमने देश-दुनिया को संदेश दिया है कि कैसे कोई शहर जल आत्मनिर्भर बन सकता है। अभी यह शुरुआत है, इसके और सुखद परिणाम दिखेंगे।
>
> **डा. सुनील चतुर्वेदी**, भूजलविद् व अमृत संचय अभियान के प्रणेता, देवास

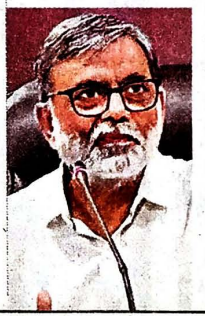

अतिरिक्त सामग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।